पाठ-2 राम-लक्ष्मण-परशुराम संवाद (MODULE-1)

कवि परिचय

हिन्दी साहित्य की रामभक्ति शाखा के प्रमुख कवि गोस्वामी तुलसीदास को हिन्दी साहित्य का सूर्य कहा जाता है । इनका जन्म सन् – 1532 में उत्तर प्रदेश के बाँदा जिले के राजापुर नामक गाँव हुआ था कुछ विद्वान इनका जन्म स्थान सोरों (जिला एटा) भी मानते हैं । तुलसी का बचपन अनेक कष्टों में बीता । जीवन के प्रारम्भिक । वर्षों में ही ये अपने माता पिता से बिछुड़ गए । बाबा नरहरिदास की

संगति में रहने से इनका झुकाव रामभक्ति की ओर हुआ । इन्होंने अयोध्या , काशी , चित्रकूट आदि अनेक तीर्थों की यात्रा की ।

रचनाएँ

श्रीरामचरित मानस,गीतवाली,कवितवाली,विनयपत्रिका, बरवै रामायण,हनुमान-बाहुक,वैराग्य संदीपनी आदि इनकी प्रमुख रचनाएँ हैं । तुलसी जी के काव्य का विषय मर्यादा पुरुषोत्तम राम की भक्ति है । अवधी और ब्रज दोनों भाषाओं पर उनका समान अधिकार है । श्रीरामचरितमानस अवधी में तथा विनय पत्रिका एवं कवितावली ब्रजभाषा में रचित है। प्रबन्ध और मुक्तक दोनों प्रकार के काव्यों का उत्कृष्ट रूप इनकी रचनाओं में मिलता है ।

पाठ - परिचय

‘राम-लक्ष्मण-परशुराम संवाद’ नामक पाठ श्रीरामचरित मानस के बालकांड से लिया गया है । राजा जनक द्वारा आयोजित सीता-स्यंवर में श्रीराम शिव-धनुष तोड़ देते हैं । जब परशुराम को यह समाचार मिलता है तो वे आग बबूला हो जाते हैं । सभा में आकर शिव धनुष तोड़ने वाले को मार डालने की धमकी देते हैं । श्रीराम की विनम्रता तथा गुरु विश्वामित्र के समझने पर वे शांत हो जाते हैं । राम-लक्ष्मण और परशुराम के बीच जो संवाद हुआ , उसी प्रसंग को यहाँ प्रस्तुत किया गया है ।

काव्यांश - 1

नाथ संभुधनु भंजनिहारा । होइहि केउ एक दास तुम्हारा ॥
आयेषु काह कहिअ किन मोहि । सुनि रिसाइ बोले मुनि कोहि ॥
सेवकु सो जो करै सेवकाई । अरिकरनी करि करिअ लराई ॥
सुनहु राम जेहि सिवधनु तोरा । सहसबाहु सम सो रिपु मोरा ॥
सो बिलगाउ बिहाइ समाजा । न त मारे जैहहिं सब राजा ॥
सुनि मुनिबचन लखन मुस्काने । बोले परसु धरहि अवमाने ॥
बहु धनुही तोरी लरिकाई । कबहुँ न असि रिस कीन्ही गोसाई ॥
येहि धनु पर ममता केहि हेतु । सुनि रिसाइ कह भृगुकुलकेतु ॥
रे नृप बालक कालबस बोलत तोहि न संभार ।
धनुहि सम त्रिपुरारिधनु बिदित सकल संसार ॥

शब्दार्थ

नाथ – स्वामी । संभुधनु – शिवधनुष । भंजनिहारा – तोड़ने वाला । आयेषु – आज्ञा । रिसाइ – गुस्सा आ गया। कोहि – क्रोधी । अरिकरनि – शत्रु कर्म । लराई – लड़ाई । रिपु – शत्रु । बिलागाउ – अलग होना । बिहाइ – छोड़कर। जैहहिं – जाएँगे । अवमाने – अपमान करते हुए । लरिकाई – बचपन में । रिस – गुस्सा । गोसाईं – स्वामी । ममता – स्नेह । हेतु – कारण ।

अर्थ

राजा जनक की सभा में सीता स्वयंवर के समय धनुष टूटने पर क्रोधित परशुराम से राम कहते हैं कि शिव धनुष को तोड़ने वाला कोई आपका दास ही होगा । मेरे लिए क्या आज्ञा है ? यह सुनकर क्रोधी मुनि गुस्सा करके बोले, सेवा का कार्य करने वाला सेवक होता है । शत्रुता का काम करने वाले से तो लड़ाई करना ही उचित है । हे राम! जिसने भी यह शिव धनुष तोडा है , वह सहस्त्रबाहु के समान मेरा शत्रु है , इसलिए वह इस राजसमाज से अलग हो जाए , अन्यथा एक के धोखे में सभी राजा मारे जाएँगे ।

अर्थ

ऋषि की क्रोध भरी बातें सुनकर परशुराम का अपमान करते हुए लक्ष्मण मुस्कराकर बोले- हमने बचपन में बहुत धनुहियाँ तोड़ी है , तब तो आपने ऐसा गुस्सा नहीं किया ।इस धनुष पर इतना स्नेह किस कारण से है ?

यह बात सुनकर भृगुकुल पताका स्वरूप परशुराम ने कहा – हे राजकुमार काल के वशीभूत होकर तुझे बोलने की कुछ भी समझ नहीं है ।विश्व विख्यात शिव - धनुष को तुम सामान्य धनुष के समान बता रहे हो ।

परशुराम

काव्यांश - 2

लखन कहा हसि ---------- बिलोकु महीपकुमारा ॥
मातु पितहि जनि सोचबस करसि महीसकिसोर ।
गर्भन्ह के अर्भक दलन परसु मोर अति घोर ॥

(क्षितिज भाग-2 , पृष्ठ सं. 13)

शब्दार्थ :- समाना – समान । छति – हानि । छुअत – छूते ही । चितै – देखकर । सठ – दुष्ट । सुभाउ – स्वभाव । बिस्वबिदित – संसार में प्रसिद्द । द्रोही – शत्रुता करने वाला । भुजबल- भुजाओं के बल पर । बिपुल – बहुत । महिदेवन्ह – ब्राह्मणों के लिए । छेदनिहारा – काटनेवाला । महीसकिसोर – राजकुमार । गर्भन्ह – गर्भ के । अर्भक – बच्चे ।

अर्थ

परशुराम की बात सुनकर लक्ष्मण ने हँसकर कहा- हे देव हमारे ज्ञान में तो सभी धनुष समान है । फिर इस पुराने धनुष के टूट जाने से क्या हानि ? और क्या लाभ ? श्रीराम ने तो इसे नया समझकर छुआ था पर यह तो छूते ही टूट गया । इसमें श्रीराम का कोई दोष नहीं हैं । मुनिवर आप तो बिना कारण ही गुस्सा कर रहे हैं । तब परशुराम अपने परसे की ओर देखते हुए बोले – तू मेरा स्वभाव नहीं जानता मैं तुझे बालक समझकर नहीं मार रहा हूँ और तू मुझे केवल साधारण मुनि समझ रहा है । मैं क्षत्रिय कुल से द्रोह करने वाला,विश्वप्रसिद्द,अत्यन्तक्रोधी,बाल ब्रह्मचारी हूँ । मैंने अपनी ताकत से कई बार इस धरती को राजा विहीन करके ब्राह्मणों को दान कर दी ।

अर्थ

हे राजकुमार ! सहस्त्रबाहु की भुजाओं को काटने वाले मेरे इस फरसे की ओर देख ।

“ हे राजकुमार ! तू अपने माता-पिता के लिए सोच का कारण मत बन । मेरा यह अत्यंत भयानक फरसा गर्भ के बच्चों को भी नष्ट करने में समर्थ है । ”

राजेन्द्र प्रसाद
टी.जी.टी. - हिन्दी,संस्कृत
प.ऊ.के.वि. काकरापार